

Chapter 7

प्रत्यभिज्ञानम्

2marks

प्रश्न 1.

प्रस्तुतपाठे केन कस्य ग्रहणं गतम्?
(प्रस्तुत पाठ में किसके द्वारा किसे पकड़ा गया?)

उत्तर :

प्रस्तुतपाठे भीमेन सौभद्रस्य ग्रहणं गतम्।
(प्रस्तुत पाठ में भीम के द्वारा अभिमन्यु को पकड़ा गया।)

प्रश्न 2.

भटः रथमासाद्य बाहुभ्यां कम् अवतारयति?
(सैनिक रथ में से भुजाओं द्वारा किसे उतारता है?)

उत्तर :

भटः अभिमन्युम् अवतारयति।
(सैनिक अभिमन्यु को उतारता है।)

प्रश्न 3.

कुत्र नीचैः अपि नामभिः अभिभाष्यन्ते?
(कहाँ पर नीच जनों के द्वारा भी नाम लेकर बुलाया जाता है?)

उत्तर :

विराटनगरे नीचैः अपि नामभिः अभिभाष्यन्ते।
(विराट नगर में नीच जनों के द्वारा भी नाम लेकर बुलाया जाता है।)

प्रश्न 4.

कः शत्रुवशं गतः?
(कौन शत्रुओं के वश में हो गया?)

उत्तर :

अभिमन्युः शत्रुवशं गतः।
(अभिमन्यु शत्रुओं के वश में हो गया था।)

प्रश्न 5.

'अभिमन्यु! सुखमास्ते ते जननी?' इति कः अपृच्छत्?
(अभिमन्यु! क्या तुम्हारी माता सुखी है? ऐसा कौन पूछता है?)

उत्तर :

इति बृहन्नला (अर्जुनः) अपृच्छत्।
(ऐसा बृहन्नला (अर्जुन) ने पूछा।)

प्रश्न 6.

केशवः कस्य पुत्रः आसीत्?
(केशव (कृष्ण) किसके पुत्र थे?)।

उत्तर :

केशवः देवकीपुत्रः आसीत्।
(केशव देवकी के पुत्र थे।)

प्रश्न 7.

अभिमन्युः सदृशाः केषु न प्रहरन्ति?
(अभिमन्यु के जैसे किन पर प्रहार नहीं करते हैं?)

उत्तर :

तादृशाः अशस्त्रेषु न प्रहरन्ति।
(उस प्रकार के लोग शस्त्ररहितों पर प्रहार नहीं करते हैं।)

प्रश्न 8.

'प्रत्यभिज्ञानम्' इति पाठः मूलतः कुतः संकलितः?
(प्रत्यभिज्ञानम् यह पाठ मूलतः कहाँ से संकलित है?)

उत्तर :

इति पाठः मूलतः महाकविभासविरचितात् 'पञ्चरात्रम्' इति नाटकात् संकलितः।
(यह पाठ मूल रूप से महाकवि भास विरचित 'पञ्चरात्रम्' नाटक से संकलित है।)

प्रश्न 9.

बृहन्नलारूपेण कः आसीत्?
(बृहन्नला के रूप में कौन था?)

उत्तर :

बहनलारूपेण पाण्डवः अर्जुनः आसीत्।
(बृहन्नला के रूप में पाण्डव अर्जुन था।)

प्रश्न 10.

'अपि कुशली देवकीपुत्रः केशवः' इति कः कम् पृच्छति?

('क्या देवकीपुत्र कृष्ण कुशल हैं'-ऐसा कौन किससे पूछता है?)

उत्तर :

इति बृहन्नला अभिमन्युं पृच्छति।

(ऐसा बृहन्नला अभिमन्यु से पूछता है।)

4marks

प्रश्न 1.

कस्य कुले आत्मस्तवं कर्तुमनुचितम्?

(किसके कुल में आत्मप्रशंसा करना अनुचित है?)

उत्तर :

पाण्डवानां कुले आत्मप्रशंसा कर्तुमनुचितम्।

(पाण्डवों के कुल में आत्मप्रशंसा करना अनुचित है।)

प्रश्न 2.

कः अभिमन्यु वञ्चयित्वा गृहीतवान्?

(किसने अभिमन्यु को धोखा देकर पकड़ लिया?)

उत्तर :

भीमसेनः अभिमन्यु वञ्चयित्वा गृहीतवान्।

(भीमसेन ने अभिमन्यु को धोखा देकर पकड़ लिया।)

प्रश्न 3.

धनुस्तु कैः एव गृह्यते?

(धनुष तो किनके द्वारा ही ग्रहण किया जाता है?)

उत्तर :

धनुस्तु दुर्बलैः एव गृह्यते।

(धनुष तो दुर्बलों के द्वारा ही ग्रहण किया जाता है।)

प्रश्न 4.

जरासन्धस्य वधं केन हतम्?

(जरासन्ध का वध किसने किया था?)

उत्तर :

जरासन्धस्य वधं भीमसेनेन कृतम्।

(जरासन्ध का वध भीमसेन ने किया था।)

प्रश्न 5.

बाहभ्यामाहतम् अभिमन्यु कः कथं नेष्यति?

(भुजाओं से पकड़कर लाये गये अभिमन्यु को कौन कैसे ले जायेगा?)

उत्तर :

बाहुभ्यामाहतम् अभिमन्युं भीमसेनः बाहुभ्यामेव नेष्यति।

(भुजाओं से पकड़े गये अभिमन्यु को भीमसेन भुजाओं से ही ले जायेगा।)

प्रश्न 6.

उत्तरः कस्य पूजा कर्तुं नृपाय कथयति?

(उत्तर किसकी पूजा करने के लिए राजा से कहता है?)

उत्तर :

उत्तरः धनञ्जयस्य पूजा कर्तुं नृपाय कथयति।

(उत्तर अर्जुन की पूजा करने के लिए राजा से कहता है।)

प्रश्न 7.

केन भीष्मादयः नृपाः भग्नाः?

(किसने भीष्म आदि राजाओं को पराजित किया?)

उत्तर :

अर्जुनेन भीष्मादयः नृपाः भग्नाः।

(अर्जुन ने भीष्म आदि राजाओं को पराजित किया।)

प्रश्न 8.

दिष्ट्या किं स्वन्तं जातम्?

(भाग्य से क्या सुखान्त हुआ?)

उत्तर :

दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तं जातम्।

(भाग्य से गो-अपहरण सुखान्त हुआ।)

(ख) प्रश्न निर्माणम्

प्रश्न 1.

अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -

1. सौभद्रः ग्रहणं गतः।
2. अभिमन्युः निश्शङ्कं बाहुभ्यामवतारितः।।
3. अयमपरं अभिमन्युः विभात्युमावेषमिवाश्रितो हरः।
4. विराटनगरे क्षत्रियवंशोद्भूताः नीचैः अपि नामभिः अभिभाष्यन्ते।
5. त्वम् पितृवदाक्रम्य स्त्रीगतां कथां पृच्छसे।
6. देवकीपुत्रः केशवः कुशली वर्तते।

7. अस्माक कुले आत्मस्तव कतुमनुचितम्।
8. रणभूमौ हतेषु शरान् पश्य।
9. अशस्त्रेषु मादृशाः न प्रहरन्ति।
10. अशस्त्रोऽयं मां वञ्चयित्वा गृहीतवान्।
11. उत्सिक्तः खल्वयं क्षत्रियकुमारः।
12. अहमस्य दर्पप्रशमनं करोमि।
13. धनुस्तु दुर्बलैः एव गृह्यते।
14. मम तु भुजौ एव प्रहरणम्।
15. भीमः जरासन्धं कण्ठश्लिष्टेन बाहुना हतवान्।
16. बाहुभ्यामाहतं भीमः बाहुभ्यामेव नेष्यति।
17. पूज्यतमस्य पूजा क्रियताम्।
18. अयमेव धनुर्धरः धनञ्जयः अस्ति।
19. यद्यहं अर्जुनः तर्हि अयं भीमसेनः।
20. दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तं जातम्।

उत्तर :

प्रश्न निर्माणम्

1. ग्रहणं गतः?
2. कः निश्शङ्कं बाहुभ्यामवतारितः?
3. अयमपरः कः विभात्युमावेषमिवाश्रितो हरः?
4. विराटनगरे के नीचैः अपि नामभिः अभिभाष्यन्ते?
5. त्वम् पितृवदाक्रम्य काम् कथां पृच्छसे?
6. देवकीपुत्रः केशवः कीदृशः वर्तते?
7. अस्माकं कुले किं कर्तुमनुचितम्?
8. रणभूमौ कान् पश्य?
9. केषु मादृशाः न प्रहरन्ति?
10. कोऽयं मां वञ्चयित्वा गृहीतवान्?
11. कीदृशः खल्वयं क्षत्रियकुमारः?
12. अहमस्य किम् करोमि?
13. धनुस्तु कैः एव गृह्यते?
14. मम तु कौ एव प्रहरणम्?
15. भीमः जरासन्धं केन हतवान्?
16. बाहुभ्यामाहतं भीमः कथं नेष्यति?
17. कस्य पूजा क्रियताम्?
18. अयमेव धनुर्धरः कः अस्ति?

19. यद्यहं अर्जुनः तर्हि अयं कः?
20. दिष्ट्या किम् स्वन्तं जातम्?

(ग) कथाक्रम-संयोजनम् -

प्रश्न 1.

अधोलिखितक्रमरहितवाक्यानां घटनाक्रमानुसारेण संयोजनं कुरुत -

1. यद्यहं अर्जुनः तर्हि अयं भीमसेनः।
2. बाहुभ्यामाहतं भीमः बाहुभ्यामेव नेष्यति।
3. विराटभटेन सौभद्रस्य ग्रहणं कृतम्।
4. दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तं येन पितरः दर्शिताः।
5. कथं मां पितृवदाक्रम्य स्त्रीगतां कथां पृच्छसे?
6. भीमा-रुष्यत्येष मया त्वमेवैनमभिभाषय।
7. अशस्त्रोऽयं मां वञ्चयित्वा गृहीतवान्।
8. पूज्यतमस्य धनञ्जयस्य पूजा क्रियताम्।

उत्तर :

वाक्य-संयोजनम्

1. विराटभटेन सौभद्रस्य ग्रहणं कृतम्।
2. भीमः-रुष्यत्येष मया त्वमेवैनमभिभाषय।
3. कथं मां पितृवदाक्रम्य स्त्रीगतां कथां पृच्छसे?
4. अशस्त्रोऽयं मां वञ्चयित्वा गृहीतवान्।
5. बाहुभ्यामाहतं भीमः बाहुभ्यामेव नेष्यति।
6. पूज्यतमस्य धनञ्जयस्य पूजा क्रियताम्।
7. यद्यहं अर्जुनः तर्हि अयं भीमसेनः।
8. दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तं येन पितरः दर्शिताः।

7marks

त्यभिज्ञानम् नाट्यांशों के सप्रसंग हिन्दी सरलार्थ एवं भावार्थ

1.

भटः – जयतु महाराजः।

राजा – अपूर्व इव ते हर्षो ब्रूहि केनासि विस्मितः?

भटः – अश्रद्धेयं प्रियं प्राप्तं सौभद्रो ग्रहणं गतः ॥

राजा – कथमिदानीं गृहीतः?

भटः – रथमासाद्य निश्शङ्कं बाहुभ्यामवतारितः।

राजा – केन?

भट – यः किल एष नरेन्द्रेण विनियुक्तो महानसे। (अभिमन्युमुद्दिश्य) इत इतः कुमारः।

अभिमन्युः – अभिमन्युः – भोः को नु खल्वेषः? येन भुजैकनियन्त्रितो बलाधिकेनापि न पीडितः अस्मि।

बृहन्नला – इत इतः कुमारः।

अभिमन्युः – अये! अयमपरः कः विभात्युमावेषमिवाश्रितो हरः।

बृहन्नला – आर्य, अभिभाषणकौतूहलं मे महत् । वाचालयत्वेनमार्यः।

वल्लभः – (अपवार्य) बाढम् (प्रकाशम्) अभिमन्यो !

अभिमन्युः – अभिमन्युर्नाम?

वल्लभः – रुष्यत्येष मया, त्वमेवैनमभिभाषय।

बृहन्नला – अभिमन्यो!

अभिमन्युः – कथं कथम्। अभिमन्यु माहम्। भोः! किमत्र विराटनगरे क्षत्रियवंशोभूताः नीचैः

अपि नामभिः अभिभाष्यन्ते अथवा अहं शत्रुवशं गतः। अतएव तिरस्क्रियते।

शब्दार्थ-अपूर्व = अद्भुत । ब्रूहि = बताइए। अश्रद्धेयं = अविश्वसनीय। सौभद्रः = सुभद्रा का पुत्र अभिमन्यु। ग्रहणं गतः = बन्दी बना लिया गया है, पकड़ लिया गया है। कथम् = कैसे। आसाद्य = पास पहुँचकर। बाहुभ्यामवतारितः (बाहुभ्याम् + अवतारितः) = भुजाओं द्वारा उतार लिया गया है। निःशङ्कं = बिना किसी संकोच के। भुजैकनियन्त्रितः = एक भुजा से पकड़ा हुआ। बलाधिकेन = अधिक बलशाली होकर। न पीडितः अस्मि = मुझे पीड़ित नहीं किया। विभाति = ऐसा प्रतीत होता है। हरः = भगवान् शिव ने। अपवार्य = एक ओर को। अभिभाषण = बात करने की। कौतूहलम् = उत्सुकता। बाढम् = ठीक है। रुष्यति = क्रुद्ध होता है। अभिभाषय = बात करने के लिए प्रेरित करो। नामभिः = नाम लेकर। अभिभाष्यन्ते = पुकारे जाते हैं। शत्रुवशं = शत्रुओं के वश में। तिरस्क्रियते = अपमान किया जाता है, उपेक्षा की जाती है।

प्रसंग प्रस्तुत नाट्यांश संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'प्रत्यभिज्ञानम्' में से उद्धृत है। इस पाठ का संकलन महाकवि भास द्वारा रचित 'पञ्चरात्रम्' नामक नाटक से किया गया है।

सन्दर्भ-निर्देश इस नाट्यांश में बताया गया है कि छद्मवेषधारी भीम युद्ध के मैदान से अभिमन्यु को पकड़कर विराट के महल में लाता है।

सरलार्थ

भटः – महाराज की जय हो।

राजा – तुम्हारी प्रसन्नता अद्भुत-सी प्रतीत हो रही है, अतः बताओ किस कारण से प्रसन्न हो?

भट – अविश्वसनीय प्रिय (समाचार) प्राप्त हो गया है, सुभद्रा का पुत्र अभिमन्यु पकड़ लिया गया है।

राजा – किस प्रकार से पकड़ लिया गया है?

भट – रथ के पास पहुँचकर बिना किसी संकोच के भुजाओं के द्वारा रथ से उतार लिया गया है। राजा

राजा – किसके द्वारा?

भट – जो इस राजा के द्वारा रसोईघर में नियुक्त किया गया है (अभिमन्यु की तरफ इशारा करके) कुमार इधर से, इधर से

अभिमन्यु – अरे! यह कौन है? जिसने एक हाथ से पकड़कर अधिक बलशाली होकर भी मुझे पीड़ित नहीं किया।

बृहन्नला – कुमार इधर से, इधर से।

अभिमन्यु – अरे! यह दूसरा कौन है, ऐसा लग रहा है जैसे भगवान् शिव ने उमा (पार्वती) का वेश ग्रहण किया हो।

बृहन्नला – आर्य! मुझे इससे बात करने की बहुत उत्सुकता हो रही है। आप इसे बोलने के लिए प्रेरित कीजिए।

वल्लभ – (एक ओर मुँह करके) अच्छा (प्रकट रूप से) अभिमन्यु!

अभिमन्यु – अभिमन्यु नाम?

वल्लभ – यह मुझसे चिढ़ता है, आप ही इसे बात करने के लिए प्रेरित कीजिए।

बृहन्नला – अभिमन्यु!

अभिमन्यु – क्यों, क्यों मेरा नाम अभिमन्यु है। अरे! क्या यहाँ विराटनगर में क्षत्रियकुल में उत्पन्न होने वाले कुमारों को नीच लोगों द्वारा (नौकर-चाकरों के द्वारा) भी नाम के द्वारा अर्थात् नाम लेकर बुलाया जाता है अथवा मैं शत्रुओं के अधीन हो गया हूँ, इसलिए मुझे अपमानित किया जा रहा है।

भावार्थ-भीमसेन युद्ध के मैदान से अभिमन्यु को पकड़कर महाराज विराट के महल में लाते हैं। भीम तथा अर्जुन दोनों अज्ञातवास के कारण अपने वास्तविक रूप में नहीं हैं। इसलिए अभिमन्यु उन्हें नीच शब्द से सम्बोधित करता है। अर्जुन की अभिमन्यु के प्रति पुत्र-प्रेम की भावना को भी दिखाया गया है।

2.

बृहन्नला – अभिमन्यो! सुखमास्ते ते जननी?

अभिमन्यु: – कथं कथम्? जननी नाम? किं भवान् मे पिता अथवा पितृव्यः? कथं मां पितृवदाक्रम्य स्त्रीगतां कथां पृच्छति?

बृहन्नला – अभिमन्यो! अपि कुशली देवकीपुत्रः केशवः?

अभिमन्यु: – कथं कथम्? तत्रभवन्तमपि नाम्ना। अथ किम् अथ किम्? (बृहन्नलावल्लभौ परस्परमवलोकयतः)

अभिमन्यु: – कथमिदानीं सावज्ञमिव मां हस्यते?

बृहन्नला – न खलु किञ्चित्।

पार्थ पितरमुद्दिश्य मातुलं च जनार्दनम् ।

तरुणस्य कृतास्त्रस्य युक्तो युद्धपराजयः ॥

अभिमन्यु: – अलं स्वच्छन्दप्रलापेन! अस्माकं कुले आत्मस्तवं कर्तुमनुचितम् । रणभूमौ हतेषु शरान् पश्य, मृते अन्यत् नाम न भविष्यति।

बृहन्नला – एवं वाक्यशौण्डीर्यम् । किमर्थं तेन पदातिना गृहीतः?

अभिमन्यु: – अशस्त्रं मामभिगतः। पितरम् अर्जुनं स्मरन् अहं कथं हन्याम्। अशस्त्रेषु मादृशाः न प्रहरन्ति। अतः अशस्त्रोऽयं मां वञ्चयित्वा गृहीतवान्।

राजा – त्वर्यतां त्वर्यतामभिमन्युः।

बृहन्नला – इत इतः कुमारः। एष महाराजः। उपसर्पतु कुमारः।

अभिमन्यु: – आः। कस्य महाराजः?

राजा – एहोहि पुत्र! कथं न मामभिवादयसि? (आत्मगतम्) अहो! उत्सिक्तः खल्वयं क्षत्रियकुमारः। अहमस्य दर्पप्रशमनं करोमि। (प्रकाशम्) अथ केनायं गृहीतः?

अन्वय-पितरम् पार्थ मातुलं जनार्दनं च उद्दिश्य कृतास्त्रस्य तरुणस्य युद्धपराजयः युक्तः।

शब्दार्थ-सुखमास्ते (सुखम् + आस्ते) = सुख से हैं। पितृव्यः = चाचा। पितृवद् = पिता की तरह। आक्रम्य = अधिकार, दिखाकर। स्त्रीगतां कथां = माता के विषय में प्रश्न। कुशली = सकुशल। तत्रभवन्तम् = आदरणीय को भी। अथ किम् अथ किम् = और क्या और क्या अर्थात् निश्चित रूप से। परस्परमवलोकयतः = एक-दूसरे को देखते हुए। मातुलं = मामा। जनार्दनम् = श्रीकृष्ण को। उद्दिश्य = याद करके। तरुणस्य = युवक के। कृतास्त्रस्य =

धनुर्विद्या में निपुण। आत्मस्तवं = अपनी प्रशंसा। मद्रते (मद् + ऋते) = मेरे सिवाय।
 वाक्यशौण्डीर्यम् = वाणी की वीरता। पदातिना = पैदल। त्वर्यताम् = शीघ्र बुलाइए।
 उपसर्पतु = समीप आएँ। एह्येहि (एहि + एहि) = आओ, आओ। न अभिवादयसि = प्रणाम
 नहीं करते। उत्सिक्तः = घमंडी। दर्पप्रशमनं = घमंड का नाश।

प्रसंग प्रस्तुत नाट्यांश संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित
 पाठ 'प्रत्यभिज्ञानम्' में से उद्धृत है। इस पाठ का संकलन महाकवि भास द्वारा रचित
 'पञ्चरात्रम्' नामक नाटक से किया गया है।

सन्दर्भ-निर्देश इस नाट्यांश में बताया गया है कि बृहन्नला (वेशधारी अर्जुन) अभिमन्यु से
 उसके माता-पिता तथा श्रीकृष्ण का समाचार पूछ रहे हैं।

सरलार्थः

बृहन्नला – हे अभिमन्यु! क्या तुम्हारी माता कुशलपूर्वक हैं?
 अभिमन्यु – क्या, क्या? माता? क्या आप मेरे पिता या चाचा हैं? आप क्यों मुझ पर पिता की
 तरह अधिकार दिखाकर माता के सम्बन्ध में पूछ रहे हैं?
 बृहन्नला – हे अभिमन्यु! क्या देवकी-पुत्र केशव सकुशल हैं?
 अभिमन्यु – क्या आदरणीय कृष्ण को भी नाम से.....? और क्या और क्या (कुशल हैं)
 (बृहन्नला और वल्लभ दोनों एक-दूसरे की ओर देखते हैं)
 अभिमन्यु – ये मेरे ऊपर तिरस्कार की भाँति क्यों हँस रहे हैं? बृहन्नला क्या कुछ ऐसा ही नहीं
 है। पिता अर्जुन तथा मामा श्रीकृष्ण वाला युवक धनुर्विद्या में निपुण होकर भी युद्ध में परास्त
 कैसे हो जाता है।

भावार्थ भाव यह है कि हे अभिमन्यु! तुम्हारे पिता अर्जुन हैं तथा मामा श्रीकृष्ण हैं। तुम
 धनुर्विद्या में निपुण भी हो फिर तुम युद्ध में कैसे पराजित हो गए, जिसके कारण बन्दी
 बनाकर तुम्हें यहाँ लाया गया है।

अभिमन्यु – स्वच्छन्द बकवास करना बन्द करो। हमारे कुल में अपनी प्रशंसा करना
 अनुचित है। युद्धभूमि में मेरे बाणों से मारे हुए सैनिकों के शरीरों को देखिए (बाणों पर) मेरे
 अतिरिक्त दूसरा नाम नहीं होगा।

बृहन्नला – अरे बाणों की ऐसी वीरता! फिर उन्होंने तुम्हें पैदल ही क्यों पकड़ लिया?
 अभिमन्यु – वे मेरे सामने बिना शस्त्र के आए। पिता अर्जुन को याद करके मैं उन्हें कैसे
 मारता। शस्त्रहीनों पर मुझ जैसे लोग प्रहार नहीं करते। अतः इस शस्त्रहीन ने मुझे धोखा
 देकर पकड़ लिया।

राजा – तुम अभिमन्यु को शीघ्र बुला लाओ।

बृहन्नला – कुमार इधर आइए। ये महाराज (विराट) हैं। राजकुमार इनके पास जाइए।

अभिमन्यु – आह! किसके महाराज?।

राजा – आओ, आओ पुत्र! मेरा अभिवादन क्यों नहीं करते हो? (मन में)

अरे! यह क्षत्रिय कुमार बहुत घमण्डी है। मैं इसका घमण्ड शान्त करता हूँ। (प्रकट रूप से)
तो इसे किसने पकड़ा?

भावार्थ-अभिमन्यु क्षत्रिय कुमार है। क्षत्रियों की मर्यादा रही है कि वे शस्त्रहीनों पर प्रहार नहीं करते। इसी कारण युद्ध के मैदान में उसने शस्त्रों से रहित छद्मवेषधारी भीम पर बाण नहीं चलाया। भीम ने उसे अपनी भुजाओं से पकड़ लिया।

3. भीमसेनः – महाराज! मया।

अभिमन्युः – अशस्त्रेणेत्यभिधीयताम्।

भीमसेनः – शान्तं पापम् । धनुस्तु दुर्बलैः एव गृह्यते। मम तु भुजौ एव प्रहरणम्।

अभिमन्युः – मा तावद् भोः! किं भवान् मध्यमः तातः यः तस्य सदृशं वचः वदति।

भगवान् – पुत्र! कोऽयं मध्यमो नाम?

अभिमन्युः – योक्त्रयित्वा जरासन्धं कण्ठश्लिष्टेन बाहुना।

असह्यं कर्म तत् कृत्वा नीतः कृष्णोऽतदर्हताम् ॥

राजा – न ते क्षेपेण रुष्यामि, रुष्यता भवता रमे।

किमुक्त्वा नापराद्धोऽहं, कथं तिष्ठति यात्विति ॥

अभिमन्युः – यद्यहमनुग्राह्यः

पादयोः समुदाचारः क्रियतां निग्रहोचितः।

बाहुभ्यामाहतं भीमः बाहुभ्यामेव नेष्यति ॥

(ततः प्रविशत्युत्तरः)

उत्तरः – तात! अभिवादये!

राजा – आयुष्मान् भव पुत्र। पूजिताः कृतकर्माणो योधपुरुषाः।

उत्तरः – पूज्यतमस्य क्रियतां पूजा।

राजा – पुत्र! कस्मै?

उत्तरः – इहात्रभक्ते धनञ्जयाय।

राजा – कथं धनञ्जयायेति?

उत्तरः – अथ किम्

श्मशानाद्धनुरादाय तूणीराक्षयसायके।

नृपा भीष्मादयो भग्ना वयं च परिरक्षिताः ॥ _

राजा – एवमेतत्।

उत्तर: . – व्यपनयतु भवाञ्छङ्काम्। अयमेव अस्ति धनुर्धरः धनञ्जयः।
 बृहन्नला – यद्यहं अर्जुनः तर्हि अयं भीमसेनः अयं च राजा युधिष्ठिरः।
 अभिमन्युः – इहात्रभवन्तो मे पितरः। तेन खलु
 न रुष्यन्ति मया क्षिप्ता हसन्तश्च क्षिपन्ति माम् ।
 दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तं पितरो येन दर्शिताः॥
 (इति क्रमेण सर्वान् प्रणमति, सर्वे च तम् आलिङ्गन्ति।)

अन्वय-(1) कण्ठश्लिष्टेन बाहुना जरासन्धं योक्त्रयित्वा तत् असह्यम् कर्म कृत्वा (भीमसेनः)
 कृष्णः अदर्हतां नीतः।
 (2) पादयोः निग्रहः उचितः समुदाचारः क्रियताम्, बाहुभ्याम् आहतं भीमः बाहुभ्याम् एव
 नेष्यति।
 (3) मया क्षिप्ता न रुष्यन्ति, हसन्तः च माम् क्षिपन्ति। दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तम् येन पितरः
 दर्शिताः।

शब्दार्थ-इत्यभिधीयताम् (इति + अभिधीयताम्) = ऐसा कहिए। भुजौ = दोनों भुजाएँ।
 प्रहरणम् = शस्त्र। योक्त्रयित्वा = बाँधकर। क्षेपेण = अपमान के द्वारा। रमे = मैं आनन्दित
 होता हूँ। अपराद्धः = अपराधी। अनुग्राह्यः = कृपा करने योग्य। निग्रहः = बंधन। योधपुरुषाः
 = योद्धा। पूज्यतमस्य = सबसे अधिक पूज्य। तूणीर = तरकश। भग्नाः = परास्त किए गए।
 व्यपनयतु = दूर करें। क्षिप्ता = आक्षेपयुक्त होने पर। दिष्ट्या = सौभाग्य से। गोग्रहणम् =
 गायों का अपहरण। स्वन्तं = सुखान्त। आलिङ्गन्ति = आलिंगन करते हैं।

प्रसंग प्रस्तुत, नाट्यांश संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ
 'प्रत्यभिज्ञानम्' में से उद्धृत है। इस पाठ का संकलन महाकवि भास द्वारा रचित 'पञ्चरात्रम्'
 नामक नाटक से किया गया है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस नाट्यांश में बताया गया है कि विराट नगर में पाण्डवों का अज्ञातवास पूरा
 होता है और सभी पाण्डव अपने पूर्व रूप में आ जाते हैं, जिन्हें अभिमन्यु तथा महाराज
 विराट आदि सभी पहचान लेते हैं।

सरलार्थ

भीमसेन – महाराज! मैंने।

अभिमन्यु – 'शस्त्रहीन होकर पकड़ा' ऐसा कहना चाहिए।

भीमसेन – शान्त हो जाइए। धनुष तो दुर्बलों के द्वारा उठाया जाता है। भुजाएँ ही मेरा शस्त्र
 हैं।

अभिमन्यु – नहीं, तो अरे! क्या आप हमारे मध्यम (मझले) तात (भीम) हैं, जो उनके समान वचन बोल रहे हैं।

भगवान् – पुत्र! यह मध्यम तात कौन हैं?

अभिमन्यु – (जिसने) अपनी भुजाओं से जरासंध को गले से पकड़कर बाँध करके जोकि कृष्ण के लिए भी उचित अवसर न आने के कारण असम्भव कर्म था, उसे करके लाए थे।

भावार्थ – जरासंध को मारने का कार्य श्रीकृष्ण को करना था, परन्तु उनके द्वारा करणीय कार्य को भीमसेन ने अपनी भुजाओं से पकड़कर पूरा किया।

राजा – तुम्हारे निन्दापूर्ण वचनों से मैं कुपित नहीं हूँ। तुम्हारे कुपित होने से मुझे आनन्द प्राप्त होता है। तुम यहाँ क्यों खड़े हो। जाओ यहाँ से अगर मैं ऐसा कहूँ तो क्या मैं अपराधी नहीं होऊँगा?

अभिमन्यु – यदि आप मुझ पर कृपा करना चाहते हैं तो मेरे पैर बाँधकर मुझे उचित दण्ड दीजिए। मैं हाथों से पकड़कर लाया गया हूँ। मेरे मध्यम तात भीम मुझे हाथों से ही छुड़ाकर ले जाएँगे। (इसके बाद 'उत्तर' का प्रवेश)

उत्तर – तात! मैं प्रणाम करता हूँ।

राजा – दीर्घायु हो पुत्र! युद्ध में वीरता दिखाने वाले वीरों का सत्कार कर दिया गया है।

उत्तर – अब सबसे अधिक पूज्य की पूजा कीजिए। राजा

राजा – किसकी पूजा पुत्र?

उत्तर – यहाँ उपस्थित अर्जुन की।

राजा – क्या अर्जुन यहाँ आए हैं?

उत्तर – और क्या? पूज्य अर्जुन नेश्मशान से अपना धनुष तथा अक्षय तरकश लेकर भीष्म आदि राजाओं को पराजित कर दिया तथा हम लोगों की रक्षा की।

राजा – ऐसी बात है?

उत्तर – आप अपना सन्देह दूर करें। धनुर्विद्या में प्रवीण अर्जुन यही हैं।

बृहन्नला – यदि मैं अर्जुन हूँ तो यह भीमसेन हैं और यह राजा युधिष्ठिर हैं।

अभिमन्यु – आप मेरे पिता हैं, इसीलिए-

मेरे निन्दापूर्ण वचनों से ये क्रोधित नहीं होते और हँसते हुए मुझे चिढ़ाते हैं। गौ-अपहरण की यह घटना सौभाग्य से सुखांत हुई है। इसी के कारण मुझे अपने सभी पिताओं के दर्शन हो गए। (ऐसा कहकर क्रम से सबको प्रणाम करता है और सब उसका आलिंगन करते हैं।)

भावार्थ-कौरवों द्वारा विराट की गौओं के अपहरण का एक विशेष प्रयोजन था। इसके माध्यम से दुर्योधन पाण्डवों के अज्ञातवास का पता लगाना चाहता था। इसी कारण इस घटना को अभिमन्यु अपने लिए सौभाग्यकारक मानता है क्योंकि इसी घटना के माध्यम से उसे अपने पिताओं (अर्जुन, भीम आदि) के दर्शन होते हैं।

प्रश्न 1.

"बूहि केनासि विस्मितः?"

रेखाङ्कितपदे प्रयुक्त सन्धेः नाम वर्तते

(अ) दीर्घ

(ब) गुण

(स) वृद्धि

(द) अयादि

उत्तर :

(अ) दीर्घ

प्रश्न 2.

"भोः को नु खल्वेषः?"

रेखाङ्कितपदस्य समुचितं सन्धि-विच्छेदः वर्तते -

(अ) खल + वेषः

(ब) खलु + वेषः

(स) खलु + एषः

(द) खलु + ईषः

उत्तर :

(स) खलु + एषः

प्रश्न 3.

"नीचैः अपि नामभिः अभिभाषन्ते।"

रेखाङ्कितपदे प्रयुक्तविभक्तिः वर्तते

(अ) द्वितीया

(ब) तृतीया

(स) पंचमी

(द) सप्तमी

उत्तर :

(ब) तृतीया

प्रश्न 4.

"..... अर्जुनं स्मरन्. अहं कथं हन्याम्।"

रिक्तस्थाने पूरणीयं समुचितपदं वर्तते

(अ) पिता

(ब) पित्रा

(स) पितुः

(द) पितरम्
उत्तर :
(ब) पित्रा

प्रश्न 5.

"अशस्त्रेषु मादृशाः न "

रिक्तस्थाने पूरणीयं क्रियापदं वर्तते

- (अ) प्रहरन्ति
(ब) प्रहरति
(स) प्रहरसि
(द) प्रहरामि

उत्तर :

(द) प्रहरामि

यथास्थानं रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत -

- (क) खलु + एषः =
(ख) बल + + अपि = बलाधिकेनापि
(ग) बिभाति + बिभात्युमावेषम्
(घ) + एनम् = वाचालयत्वेनम्
(ङ) रुष्यति + एष = रुष्यत्येष
(च) त्वमेव + एनम् =
(छ) यातु + = यात्विति
(ज) + इति = धनञ्जयायेति

उत्तरम् :

- (क) खलु + एषः = खल्वेषः
(ख) बल + अधिकेन + अपि = बलाधिकेनापि
(ग) बिभाति + उमावेषम् = बिभात्युमावेषम्
(घ) वाचालयतु + एनम् = वाचालयत्वेनम्
(ङ) रुष्यति + एष = रुष्यत्येष
(च) त्वमेव + एनम् = त्वमेवैनम्
(छ) यातु + इति = यात्विति
(ज) धनञ्जयाय + इति = धनञ्जयायेति

प्रत्यभिज्ञानम् (पहचान) Summary in Hindi

प्रत्यभिज्ञानम् पाठ-परिचय

प्रस्तुत पाठ भासरचित 'पञ्चरात्रम्' नामक नाटक से सम्पादित किया गया है। संस्कृत के नाटककारों में महाकवि 'भास' का नाम अग्रगण्य है। 'पञ्चरात्रम्' की कथावस्तु महाभारत के विराट पर्व पर आधारित है। पाण्डवों के अज्ञातवास के समय दुर्योधन एक यज्ञ करता है और यज्ञ की समाप्ति पर आचार्य द्रोण को गुरु-दक्षिणा देना चाहता है। द्रोणाचार्य गुरु-दक्षिणा के रूप में पाण्डवों का राज्याधिकार चाहते हैं। इसके लिए दुर्योधन पाँच रातों में पाण्डवों को ढूँढने की शर्त रखता है। इसी कारण इस नाटक का नाम 'पञ्चरात्रम्' रखा गया है।

पाठ में वर्णित कथा के अनुसार दुर्योधन आदि कौरव वीरों ने राजा विराट की गायों का अपहरण कर लिया। विराट-पुत्र उत्तर बृहन्नला (छद्मवेषी अर्जुन) को सारथी बनाकर कौरवों से युद्ध करने जाता है। कौरवों की ओर से अभिमन्यु (अर्जुन-पुत्र) भी युद्ध करता है। युद्ध में कौरवों की पराजय होती है। इसी बीच विराट को सूचना मिलती है, वल्लभ (छद्मवेषी भीम) ने युद्धभूमि में अभिमन्यु को पकड़ लिया है। अभिमन्यु भीम तथा अर्जुन को नहीं पहचान पाता और उनसे उग्रतापूर्वक बातचीत करता है। दोनों अभिमन्यु को महाराज विराट के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। अभिमन्यु महाराज विराट को भी प्रणाम नहीं करता। उसी समय राजकुमार उत्तर वहाँ पहुँचता है, जिसके रहस्योद्घाटन से अर्जुन तथा भीम आदि पाण्डवों के छद्मवेष का पता चल जाता है।